पशुधन द्वारा
जीवन में गुणात्मक सुधार

पशुओं में डेगनाला रोग बचाव एवं चिकित्सा

बिहार सरकार
पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग

राज्य के कुछ जिलों में पशुओं में फैले डेगनाला रोग से बचाव एवं चिकित्सा के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश:

डेगनाला रोग के लक्षण: पशुओं में डेगनाला रोग मुख्यतः भैंस जाति के पशुओं में होता है। इसे पूँछकटवा रोग भी कहते हैं, जो गो जाति के पशुओं को भी प्रभावित करता है। प्रभावित पशु के पूँछ, कान आदि सुखने लगते हैं। पैर के नीचले भाग में पहले सूजन हो जाता है और अंततः वहाँ का मांस सड़कर गिर जाता है। पशु भोजन करना बन्द कर देता है और दिन–प्रतिदिन कमजोर होता जाता है।

बचाव:

- चारा एवं पानी में बदलाव आवश्यक है। ताजा एवं साफ चारे का प्रबंध किया जाय।
- सड़ा पुआल एवं गंदा पानी का व्यवहार वर्जित है।
- खाने में उच्च स्तर का प्रोटीन भोज्य पदार्थ जैसे–सरसों, तीसी, बादाम की खल्ली, एवं दलहन का व्यवहार पशु के कार्य करने की क्षमता के अनुसार यथोचित मात्रा में दिया जाय।
- उच्च गुणवत्ता वाली मिनरल मिक्चर शारीरिक वजन के अनुसार दो माह तक खाने के साथ दिया जाय। पीने का साफ एवं ताजा पानी भरपुर मात्रा में दिया जाय।
- रोग से ग्रसित पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग रखा जाय।
- पशुओं को गन्दे तथा नमी वाले स्थान से अलग रखा जाये तथा बाड़े की नियमित सफाई हेतु किटाणु एवं विषाणु नाशक दवा का प्रयोग किया जाय।

डेगनाला रोग से ग्रसित पशुओं की चिकित्सा:

- प्रभावित भाग को एन्टीसेप्टिक सोलुशन से अच्छी तरह साफ कर लिया जाय।
- यदि Gangrenous भाग हो तो Local Anaesthesia का प्रयोग करते हुए Gangrenous भाग के 1 इंच उपर से काटकर अलग कर दिया जाय। शेष बचे हुए स्वस्थ (Healthy) भाग पर एन्टीसेप्टिक / एन्टीबायोटिक दवा का प्रयोग किया जाय। कटे हुए भाग को जख्म सुखने तक Proper Dressing किया जाय।
- घाव सुखाने हेतु Long Acting Antibioties का इस्तेमाल वजन के अनुसार घाव सुखने तक किया जाय।
- Pentasulphate दवा (Ferrous Sulphate-166Gm., Copper Sulphate-24 Gm., Zince Sulphate75 Gm., Cobalt Sulphate-5Gm., Magnesium Sulphate-100Gm.) का प्रयोग प्रथम दिन 30 ग्राम दिन में दो बार तथा दूसरे दिन से 30 ग्राम प्रतिदिन एक बार गुड़ में मिलाकर बीस दिन तक दिया जाय।
- विटामिन A, D3, E एवं Selenium युक्त दवा का उपयोग किया जाय। साथ ही प्रोबायोटिक एवं विटामीन बी कॉम्प्लेक्स का प्रयोग किया जाय।
- Invermectin Inj. का इस्तेमाल वजन के अनुसार किया जाय।
- रोग प्रतिरोधक क्षमता बढाने वाली दवाओं जैसे– Levamisole एवं अन्य आयुर्वेदिक दवाओं का प्रयोग वजन के अनुसार किया जाय।
- टी वर्व कैप्सूल एवं अन्य आयुर्वेदिक चर्म रोग दवाओं का इस्तेमाल आवश्यकता के अनुसार किया जाय।

विशेष जानकारी हेतु निकटवर्ती पशु चिकित्सालय/पशु स्वास्थ्य एवं उत्पादन संस्थान, बिहार, पटना (दूरभाष संख्या–0612–2226049) से संपर्क किया जा सकता है।

पशुपालन निदेशालय, पशु एवं मत्स्य संसाधन विभाग, बिहार द्वारा जनहित में प्रकाशित